२०२२-२०२३

अप्रैल : 2023

ISSN 2278 - 6880
Approved by UGC

संग्रथन

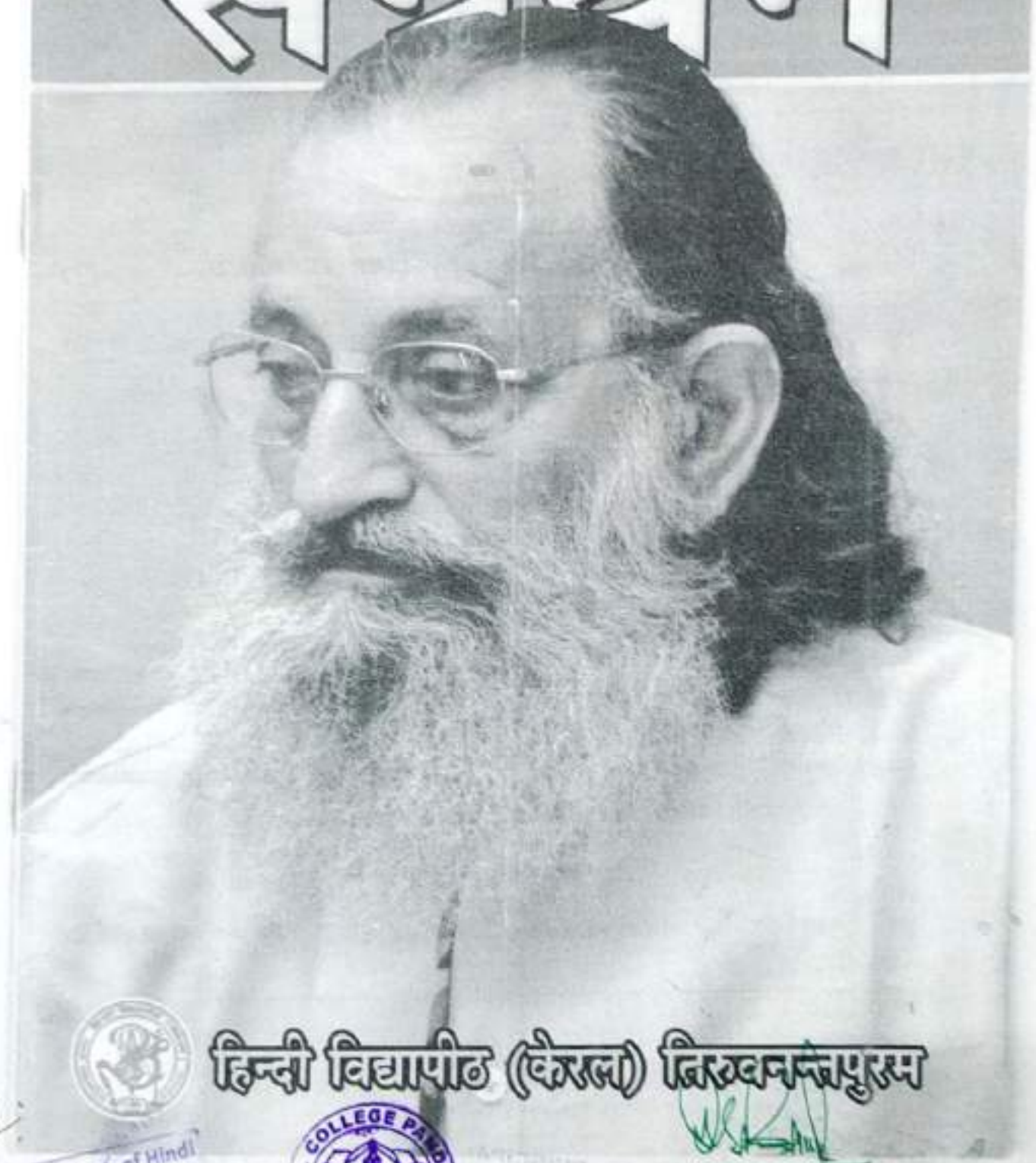

हिन्दी विद्यापीठ (केरल) तिरुवनन्तपुरम

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

N.S.S. COLLEGE PANDALAM

PRINCIPAL
N.S.S. College, Pandalam

Scanned with CamScanner

ISSN 2278 - 6880
Approved by UGC

संग्रथन

यू.जी.सी. से अनुमोदित हिन्दी मासिक पत्रिका

हिन्दी विद्यापीठ,
टी.सी.44/2670,जगती,
तिरुवनन्तपुरम- 695014
केरल।

संस्थापक संपादक :
स्व.पी.जी.वासुदेव

मुख्य संपादक :
डॉ.पी.वी.विश्वम
Mob: 9446662694
sangrathan2012@gmail.com

संपादक:
डॉ.एम.एस.विनयचन्द्रन
Mob: 9447657301
msvinayachandran61@gmail.com

Web Edition : www.sangrathan.com

Web Edition : www.sangrathan.com

वर्ष : ३५
अंक : 4
अप्रैल : 2023
मूल्य : २० रुपये मात्र
आजीवन सदस्यता शुल्क : २,००० रुपये मात्र
वार्षिक चन्दा : दो सौ रुपये मात्र

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

PRINCIPAL
N.S.S. College, Pandalam

Scanned with CamScanner

संग्रथन का संरक्षक मण्डल

आचार्य राजेन्द नाथ मेहरोत्रा, 'हिन्दी-विश्व गौरव-ग्रन्थ' शृंखला के प्रणेता एवं प्रकाशक, ग्वालियर (म.प्र.), मो:९४२५११००७७
प्रो.(से.नि.).डॉ.टी.जी.प्रभाशंकर'प्रेमी',विश्वविख्यात हिन्दी साहित्यकार एवं शिक्षाविद्,बंगलूर,मो:९८८०७६-८१२१७८
श्री विमलकुमार बजाज,प्रखर समाजसेवी,व्यवसायी एवं अध्यक्ष, पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी,शिलौंग,मेघालय,मो:९४३६१-११८११
श्री योगेन्द्र कुमार, नोइडा (उ.प्र) डॉ.उमाकुमारी.जे.

सम्पादक मण्डल

प्रोफ.डिल्डा जोसफ
डॉ.एम.एस.राधाकृष्ण पिल्लै
डॉ.सी.जे.प्रसन्नकुमारी
डॉ.श्रीलता.के
डॉ. सुमा.एस
प्रोफ.ए.मीरा साहिब
श्री.के.जनार्दनन नायर
प्रोफ.एन.सत्यवती
डॉ. सुनिलकुमार.एस
डॉ.मोहिका राजन

इस अंक में....

संपादकीय: भारतीयता के उन्नायक आचार्य राजेन्द्र नाथ मेहरोत्रा अब न रहे	डॉ.वी.वी.विश्वम्	5-6
मन की बात (मार्च - २०२३)	श्री नरेन्द्र मोदी	7-14
मेरे परम आदरणीय गुरुवर एवं सर्वप्रिय साथी-सहयोगी स्व.प्रो.आर.कुमारन नायरजी एवं मित्रवर प्रो.वी.के.रवीन्द्रनाथ जी	प्रोफ.वी.डी.कृष्णन नंपियार	15-17
केदारनाथ सिंह की कविताओं का सौन्दर्यशास्त्रीय विवेचन	शुभ्रा पांडेय	18-22
ऑनलाइन रोमांस : फरेबी दुनिया का पर्दाफ़ाश	डॉ.अंबिली.वी.एस.	22-24
वर्चुअल रियालिटी (आभासी यथार्थ) और साहित्य : दिव्या माथुर की कहानी २०५० के विशेष संदर्भ में	डॉ.इन्दु.के.वी.	25-29
असीम प्रेरणा : स्वामी विवेकानंद	डॉ.प्रियारानी.पी.एस.	30-32
मोहनदास नैमिशराय की कहानियों में वर्ग-चेतना	नवमी भद्रन	33-36
विस्थापन की विभीषिका 'डूब' उपन्यास के आईने में	जेइम्स सिबि	37-39
हाशिएकृत मानव की त्रासद गाथा - 'मोहनदास'	डॉ.राजेष.आर.	39-41
दूधनाथ सिंह के 'यमगाथा' में मिथक	डॉ.अंबिली.के.वी.	42-45
भक्ति और मोक्ष : विशिष्टाद्वैत की मीमांसा	डॉ.नीना.टी.एस.	46-48
'बारोमास' उपन्यास में अभिव्यक्त किसान संघर्ष : भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन	जसीला.ए.के.	49-51
छल-छद्म रहित सचेतनता : आलोचक विजय मोहन सिंह	शीतांशु	52-54

मुखचित्र - स्वर्गीय डॉ.राजेन्द्र नाथ मेहरोत्रा

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

PRINCIPAL
N.S.S. College, Pandalam

Scanned with CamScanner

ऑनलाइन रोमांस : फरेबी दुनिया का पर्दाफ़ाश

सुषमा मुनीन्द्र

डॉ.अंबिली.वी.एस.

सूचना-प्रौद्योगिकी ने नयी पीढ़ी पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव डाला है। इन्टरनेट, सूचना का असीमित भण्डार है और वर्तमान समय में ज्ञान को अद्यतन बनाए रखने केलिए इसका नियमित इस्तेमाल करना अत्यंत ज़रूरी है। लेकिन इसमें बड़ी सावधानी रखनी चाहिए। क्योंकि इसके ग़लत उपयोग से किसी की भी ज़िन्दगी बर्बाद हो सकती है। युवा पीढ़ी पर इन्टरनेट का बुरा असर कुछ ज़्यादा ही पड़ता है। युवा वर्ग इन्टरनेट की मायावी दुनिया में फँसकर कई प्रकार के शोषण का शिकार हो रहे हैं। लेखिका सुषमा मनीन्द्र की कहानी 'ऑनलाइन रोमांस' इन्टरनेट की फरेबी दुनिया पर अंधाधुंध विश्वास करनेवालों के आगे चेतावनी बनकर उपस्थित हो जाती है।

५ अक्टूबर १९५९ को मध्यप्रदेश के रीवा में जन्मी सुषमा मुनीन्द्र समकालीन महिला-कथाकारों में यशस्वी स्थान रखती हैं। छोटी सी आशा, गृहस्थी (उपन्यास), मेरी बेटियाँ, अस्तित्व, नुक्कड़ नाटक, मृत्यु गंध, अपना ख्याल रखना, महिमा मंडित, ऑन्लाइन रोमांस, जसोदा एक्सप्रेस, अंतिम पहर का स्वप्न (कहानी-संग्रह) आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

'ऑनलाइन रोमांस' कहानी का मुख्य पात्र डेरी एम.बी.ए की छात्रा है। पढ़ाई का बहाना बनाकर वह हर रोज़ रात से आठ बजे तक साइबर कैफ़े जाती है और अपना

छोर की भी कविता करते हैं।

वह यह सवाल करते हैं कि जब ट्रेन नहीं रुकती आंकुसपुर में तो फिर पृथ्वी पर यह आंकुसपुर क्यों। वे अपनी सांस की डिबिया में इस अंधेरी बस्ती को उसकी अथाह वेदना, बेचैनी, आशा, आकांक्षा और आग के साथ भर लेना चाहते हैं। केदारनाथ सिंह ने जीवन के सन्दर्भों को बड़ी बारीकी से अपनी कविताओं में गुथा है।

केदार की कविता मनुष्य की जीवनी शक्ति को, उसकी संघर्षशील चेतना को रेखांकित करने वाली है। वे असली कविता की तलाश करते हैं। केदारनाथ ने मानव-सौन्दर्य के अन्तर्गत किसान, मजदूर, माँ और स्त्री सभी को समेट लिया है। वे सौन्दर्य को मांसलता तक सीमित रखने वाले कवि नहीं हैं।

असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी
राजेन्द्र मिश्र महाविद्यालय
सहरसा, बिहार।

■

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

PRINCIPAL
N.S.S. College, Pandalam

N.S.S. COLLEGE PANDALAM

Scanned with CamScanner

चैटिंग फ्रेंड संजोग से ऑनलाइन रोमांस करती है। सुनिश्चित किया गया इस एक घंटे की वजह से उसकी पढ़ाई पर बुरा असर पड़ रहा है, फिर भी ऐसा आनंद और रोमांस उसे अब तक नहीं मिला था। उसे ऐसा लग रहा था कि "जिस दिन दिनचर्या से यह सात से आठ का वक्त निकल जाएगा, जिन्दगी के अर्थ खो जायेंगे। ओह...कहाँ मालूम था इन्टरनेट की दुनिया इस कदर तिलस्मी होती है।" ('ऑनलाइन रोमांस', सुषमा मुनीन्द्र, पृ.सं.४५) डेसी जानती है कि अपने अल्पशिक्षित माँ-बाप को किस प्रकार सांत्वना देना है। जब वे इस तरह वक्त बर्बाद करने केलिए डेसी को डांटते हैं तो डेसी इसे 'स्टूडेंट रिकैरमेंट' कहकर उन्हें बेवकूफ बनाती है- "नेट पर तमीज ही सीखती हूँ कॉस्मोपॉलिटन मैनरिस्म। माँ तुम नहीं जानती, इन्टरनेट सूचना का असीमित भण्डार है और अपडेट नॉलेज केलिए इसका नियमित इस्तेमाल कितना ज़रूरी है। इन्टरनेट स्टूडेंट केलिए रेकैरमेंट बन गया है।" (ऑनलाइन रोमांस, सुषमा मुनीन्द्र, पृ.सं.४८) डेसी वहाँ औसत वर्तमान पीढ़ी का प्रतिनिधि बनकर आती है जो पढ़ाई के नाम पर अपना कीमती वक्त बेवजह नष्ट कर रही है। लेकिन वह इन्टरनेट की भलाई की ओर ध्यान नहीं दे रही है।

इन्टरनेट का सदुपयोग करने से बहुत अधिक लाभ होगा। दुनिया भर की सूचनाएँ पलक झपकते ही गूगल जैसी बड़ी लाइब्रेरी से मिलेंगी और कहीं भी अच्छा कैरियर तलाशा जा सकता है। कम्प्यूटर और इन्टरनेट का करिश्मा है कि उसके ज़रिए हम ऊँची-ऊँची मंजिलों को छू सकते हैं। फिर भी ज्यादातर लोग इन्टरनेट को मात्र मन बहलाने का माध्यम बनाते हैं। कुछ लोग चैटिंग करने में आनंद ले अपने बारे में सारी बातें बता देते हैं।

संजोग खुद को करोड़ों का मालिक व घर का इकलौता चिराग बताता है। वह अपने को एम.बी.ए. उपाधि प्राप्त बिसिनेस मैन कहता है तो बिना किसी संदेह से डेसी उस पर विश्वास करती है और दिन-ब-दिन उसकी प्यार में दीवानी हो जाती है। डेसी बिना कुछ सोचे-समझे चैटिंग फ्रेंड से अपने बारे में सारी बातें बताती है। संजोग खुद को एम.बी.ए. उपाधि प्राप्त करोड़पति बिजनेस मैन व घर की एकमात्र संतान कहता है। डेसी उस पर अंधाधुंध विश्वास करती है और दिन-ब-दिन उसके प्यार में दीवानी होती जाती है।

जब घरवाले डेसी की शादी पक्की करना चाहते हैं तो डेसी उन्हें रोककर कहती है, "मैं ने अपने लिए नेट पर सुपात्र ढूँढ लिया है। पैसा एक न लगेगा और करोड़ों का माल मेरा।" (वही,पृ.२५१)

लेकिन उसकी माँ इस फैसले से खुश नहीं है जो इन शब्दों से व्यक्त होता है- "डेसी हमारे ये संस्कार नहीं कि लड़की खुद अपने लिए लड़का ढूँढ ले। थोड़ा अक्ल से काम लो।" (वही,पृ.२५१) माँ का कहना है कि डेसी उस लड़के को जानती ही कितना हो। मगर बेटी माँ की पारंपरिक सोच को इस तरह नकारती है कि, "जानते तो

Scanned with CamScanner

हम उन्हें भी नहीं जिनसे एक या दो मुलाकात में शादी कर लेते हैं, तुम पापा को जानती थी? अब भी कहती हो कि पापा को ठीक से नहीं समझ पायी। मेरी और संजोग की रुचि, मिजाज, विचार बहुत मिलते हैं। बुद्धिमान लोग कहते हैं अब कुंडली नहीं, केमिस्ट्री मिलनी चाहिए। यही आदर्श व्यवस्था है।" (वही,पृ.२५२)

डेसी की तरह नयी पीढ़ी की कई लड़कियाँ माँ-बाप का मान-सम्मान किए बिना उन्हें अनपढ़, गंवार कहकर दुत्कराती हैं। ऐसी लड़कियों को पति नहीं पैकेज चाहिए -पैसा, सुख, चैन, ऐश आदि का रिची-रिच पैकेज।

संजोग को इम्प्रेस करने केलिए डेसी पहली बार ब्यूटी पार्लर जाती है और अपने रूप को निहारने केलिए अधिक समय एवं पैसा खर्च करती है। ब्यूटी पार्लर में महिलाओं -लड़कियों की बेहिसाब भीड़ का ज़िक्र करके सुषमा मुनीन्द्र ने फैशन व सौन्दर्य की नव संस्कृति के पीछे भागनेवालों पर व्यंग्य का बाण छोड़ा है। ऐसे लोग आर्थिक विपन्नता के होते हुए भी ब्यूटी पार्लर जाकर पैसा खराब करते हैं। डेसी सज-सँवरकर संजोग से मिलने जाती है। लेकिन संजोग की जगह किसी लड़की को पाकर उसे विदित हो जाता है कि उसके साथ धोखा हुआ है। अपमान और सदमे से वह बिलकुल टूट जाती है। असल में संजोग उस फ्रेन्क लड़की का क्लासमेट था और उसने इस लड़की के इश्क का मज़ाक बनाया था। वह रईस बाप का अकेला लड़का था। उस धोखेबाज़ से बदला लेने केलिए लड़की अपनी पहचान छिपाकर संजोग के नाम का इस्तेमाल करने लगी। लड़की स्किज़ोफ्रेनिया का शिकार है, पर वह यह मानने केलिए तैयार नहीं है। वह डेसी को वहीं छोड़कर लापरवाही दिखाते हुए चली जाती है।

अपनी पहचान को गोपनीय रखकर लड़की ने डेसी का भावनात्मक शोषण किया है और ऐसा करके उसे मानसिक तृप्ति भी मिली थी। डेसी इस अपमान का बदला लेना चाहती है, मगर वह साइबर कानून की मदद लेकर उस अपराधी को सज़ा भी नहीं दिला सकती, क्योंकि उससे डेसी की ही बदनामी होगी। प्रेम में चोट खाई डेसी खुद को ही कोस रही थी कि काश वह इन्टरनेट की फरेबी दुनिया में लड़की और लड़के का फर्क समझ पाती। उसे यह भी नहीं मालूम कि उस धोखेबाज़ को कैसे दण्डित करे। लेकिन अब उसे विश्वास हो गया है कि वह प्यार में ठगी गयी है, बेवकूफ़ बनाई गयी है और उसके सपने की सुन्दर दुनिया का अस्तित्व हमेशा केलिए मिटा दिया गया है। उसे यह सबक मिला कि इन्टरनेट की तिलस्मी दुनिया में संबंधों की न महत्ता है न गरिमा। अतः इन्टरनेट की चकाचौंध में स्वयं भूलकर आगे बढ़ना बेवकूफी है।

सहायक आचार्या,
हिन्दी विभाग,
एन.एस.एस.कॉलेज,
पन्दलम, पत्तनमतिट्टा,
केरल।

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam
PRINCIPAL
N.S.S. College, Pandalam
N.S.S. COLLEGE PANDALAM
Scanned with CamScanner